मुद्रा परिमाण सिद्धान्त

Monetary Economics

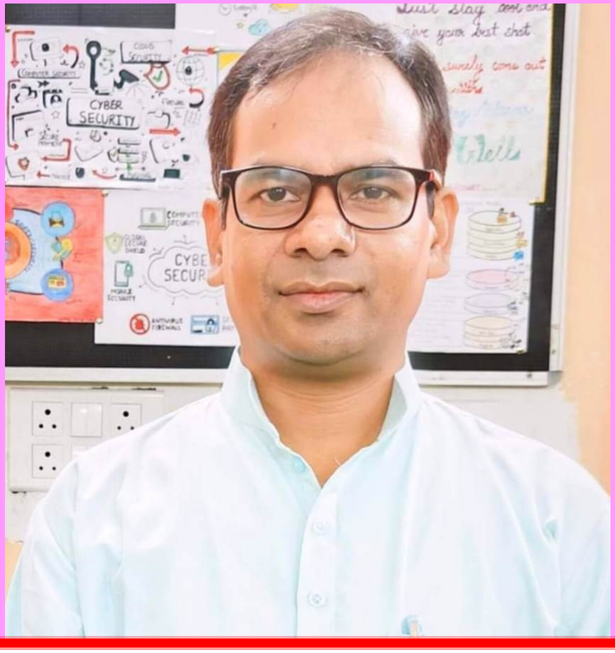

Economics by D Kumar

मुद्रा का मूल्य एवं मुद्रा का परिमाण सिद्धान्त :–

मुद्रा का मूल्य– मुद्रा के मूल्य से आसय सामान्यतया मुद्रा की क्रय शक्ति से लगाया जाता है। जों मूल्य स्तर पर निर्भर करता है। मुद्रा की क्रय शक्ति एवं मूल्य स्तर के बीच विपरीत सम्बन्ध होता है। यदि मूल्य स्तर P है तो मुद्रा की क्रयशक्ति = **1/p** होगी

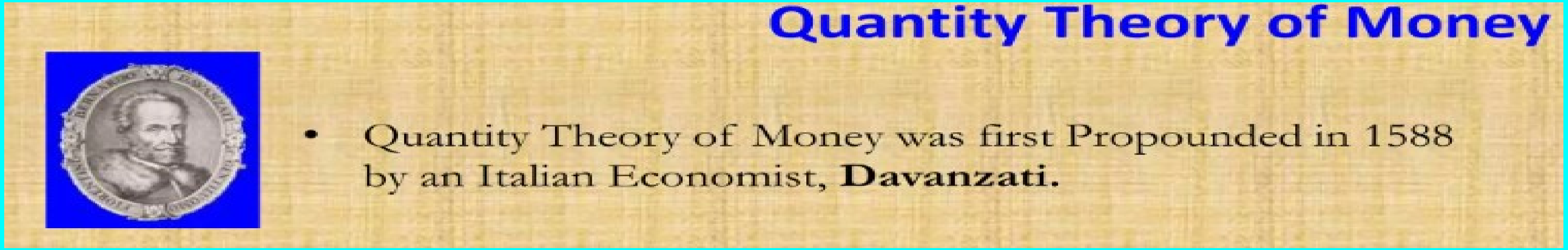

मुद्रा का परिमाण सिद्धान्त को डेविड हयूम, जॉन लाक, जीन बोदिन आदि अर्थशास्त्रियों ने समर्थन किया। पर आधुनिक काल में इस सिद्धान्त को अधिक सरल बनानें का श्रेय पीगू एवं रार्वट्सन को है। सरल रूप में मुद्रा परिमाण सिद्धान्त यह बताता है कि मुद्रा की मात्रा एवं कीमत स्तर के बीच प्रत्यक्ष आनुपातिक सम्बन्ध है जब कि मुद्रा की मात्रा एवं मुद्रा के मूल्य के बीच विपरीत आनुपातिक सम्बन्ध पाया जाता हैं।

SUBSCRIBE
TO OUR CHANNEL
Economics D Kumar

मुद्रा परिमाण सिद्धान्त को दो भागों में विभाजित किया जाता हैं–

1– मुद्रा परिमाण सिद्धान्त का नकद लेनदेन दृष्टिकोण– फिशर.

2– मुद्रा परिमाण सिद्धान्त का नकद शेष दृष्टिकोण –कैम्ब्रिज

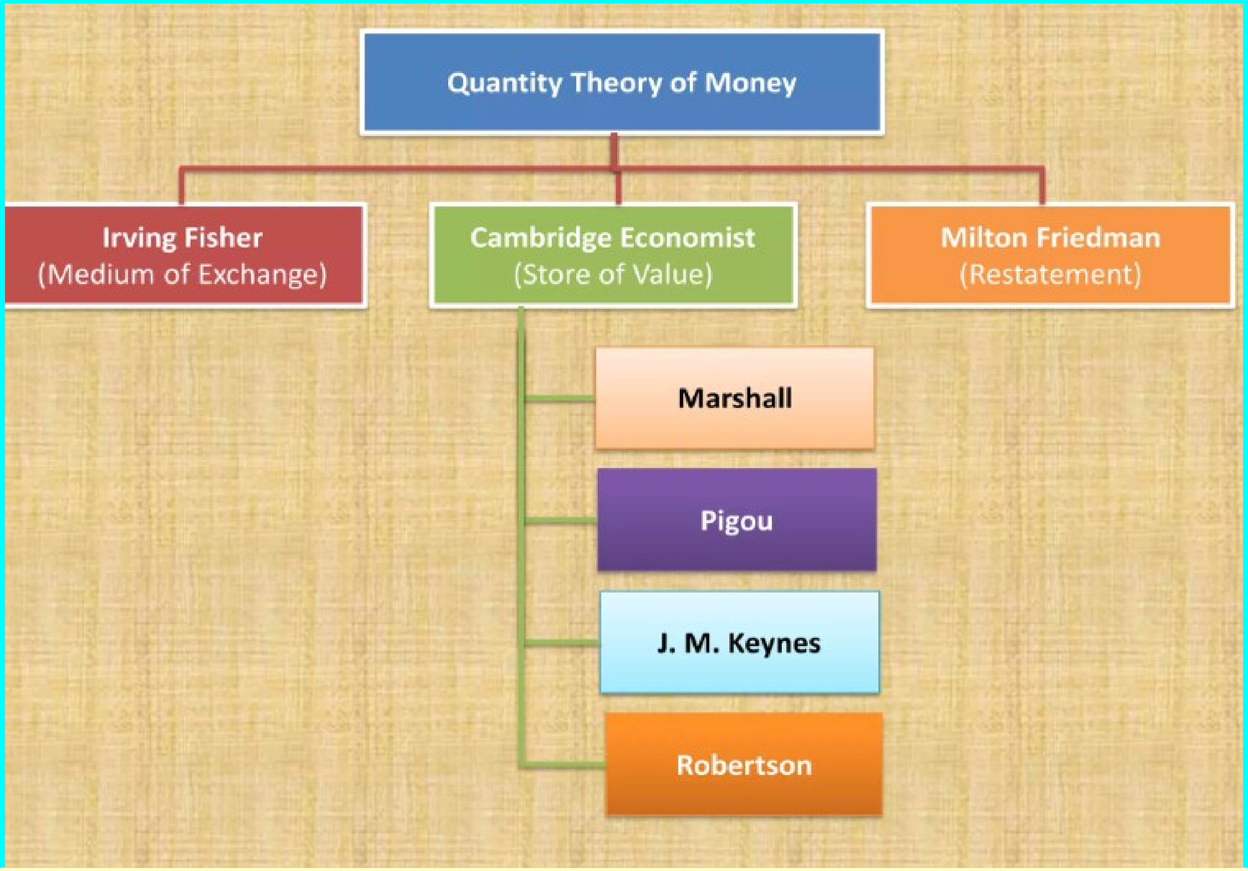

नकद लेनदेन दृष्टिकोण–

ई0फिशर का यह दृष्टिकोण उनकी पुस्तक The Purchasing Power of Money (1911) में प्राप्त हुआ। फिशर ने यह बताया किं व्यवसायिक लेनदेन दृष्टिकोण मुद्रा के विनिमय माध्यम कार्य पर आधारित है। अतः मुद्रा की मांग विनिमय कार्य को सम्पादित करने के लिए की जाती हैं। मुद्रा भुगतान का माध्यम है। जब कभी हम किसी वस्तु या सेंवा को क्रय करते है तो हम उसका भुगतान मुद्रा के द्वारा करते है, ये भुगतान ही लेनदेन या व्यापारिक सौदे है जिनके लिए मुद्रा की आवश्यकता होती हैं। फिशर के अनुसार मुद्रा का मूल्य उसकी मांग एवं पूर्ति के आधार पर निर्धारित होगा। क्योकिं मुद्रा के मूल्य का सिद्धान्त सामान्य मूल्य सिद्धान्त की ही एक विशिष्ट अवस्था है।

Economics D Kumar

मान्यताएं :–

कीमत स्तर (P) एक अक्रियाशील तत्व है।

कुल वस्तु व्यवहार (T) एवं मुद्रा की औसत चलनगति (V) स्थिर हैं

अर्थव्यवस्था पूर्णरोजगार में हैं।

दीर्घकालीन समयावधि की मान्यता है।

$$\text{मुद्रा का प्रचलन वेग} = \frac{\textbf{सकल राष्ट्रीय आय}}{\textbf{मुद्रा की चलन में मात्रा}}$$

SUBSCRIBE
TO OUR CHANNEL

Economics D Kumar

मुद्रा की मांग:–मुद्रा की मांग मात्र विनिमय क्रिया को सम्पादित करने के लिए की जाती है। यदि वस्तु का मूल्य 2 Rs. प्रति इकाई है और 1000 वस्तुएं क्रय करने के लिए 1000x 2 = 2000 Rs की मांग की जायेगी, इस प्रकार एक समययावधि मे जितनी वस्तुएं एवं सेवाए मुद्रा के बदले विनियम की जाती है। वही मुद्रा की कुल मांग प्रदर्शित करेंगी।

इस प्रकार मुद्रा की मांग = कीमत x वस्तु की विनिमय मात्रा = P x T or Md= PT

मुद्रा की कुल पूर्ति M_s = मुद्रा की मात्रा x उसकी औसत चलन गति अथवा Ms = M X V=MV

अत: Ms = MV संतुलन की स्थिति

Md = PT → Demand of Money

Ms = MV → Supply of Money

PT= MV → Equilibrium

P= MV/T

- **M V + M'V' = P T**
  - **M** - Money Supply
  - **V** - Velocity of Circulation of M (Number of Transaction)
  - **P** - Price Level
  - **M'** - Credit Money
  - **V'** - Velocity of Circulation of M' (Number of Transaction)
  - **T** - Transaction performed (Total no. of G/S exchanged for money)

SUBSCRIBE

P= f (M)
P- Price Level,
1/P = f (M)
1/P = Purchasing Power of Money

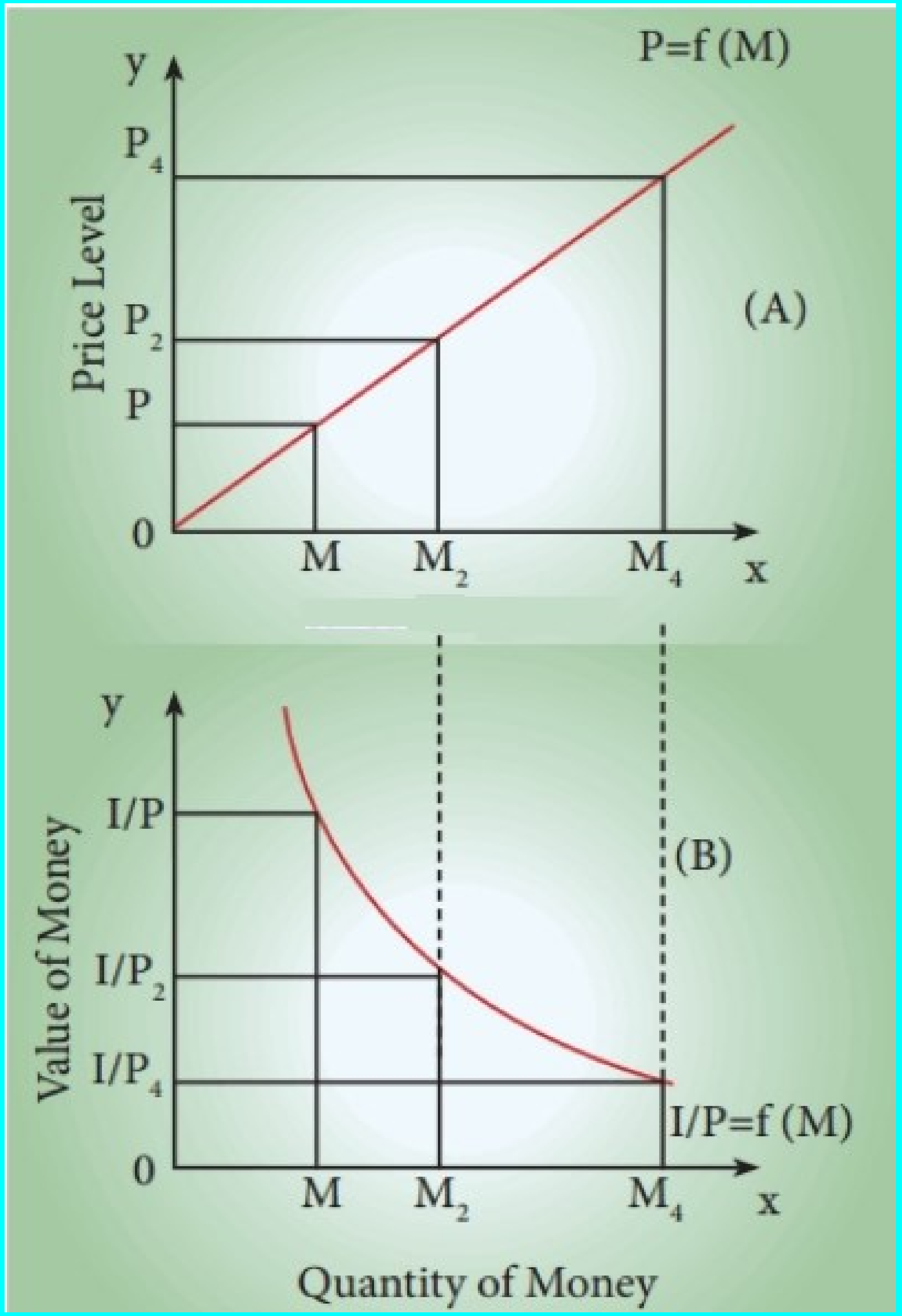

SUBSCRIBE
TO OUR CHANNEL

Economics D Kumar

Thank YOU

SUBSCRIBE
TO OUR CHANNEL

Economics D Kumar